ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 84-89
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. कुमारी सुकेशिनी जैपाल खोब्रागडे
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाडा
(सिरोही), आबूरोड.

2. रोशनी भारती
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

कुमारी सुकेशिनी जैपाल खोब्रागडे
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाडा
(सिरोही), आबूरोड.

श्रवण-बाधित विद्यार्थियों में पठन-लेखन कौशल (Reading & Writing Skills) का विकास : एक चुनौती

सारांश : श्रवण-बाधित विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, विशेषकर पठन और लेखन कौशल के संदर्भ में। श्रवण बाधा के कारण विद्यार्थी श्रवण संवेदनाओं में कमी महसूस करते हैं, जिससे वे भाषा के ध्वन्यात्मक स्वरूप, उच्चारण और वाक्य संरचना को समझने में कठिनाई का सामना करते हैं। यह कठिनाई उनके शब्दावली के विकास और वाचन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अतिरिक्त, श्रवण-बाधित बच्चे सामान्य कक्षा में होने पर सुनने और समझने में पिछड़ जाते हैं, जिससे उनके लेखन कौशल पर भी असर पड़ता है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि इन विद्यार्थियों के लिए पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ पर्याप्त नहीं हैं। विशेष शिक्षा पद्धतियाँ, जैसे कि दृश्य-सहायक उपकरण, संकेत भाषा, पाठ्यक्रम में अनुकूलन और इंटरेक्टिव शिक्षण तकनीक, उनकी पठन-लेखन क्षमताओं को सुधारने में सहायक हो सकती हैं। इसके बावजूद, कई बार शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों की कमी और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ इन प्रयासों को सीमित कर देती हैं। साथ ही, अभिभावक की सहभागिता और घर का भाषा वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। घर पर लगातार पढ़ाई और लेखन का अभ्यास न होने के कारण विद्यार्थी अपनी कौशल प्रगति में धीमे रहते हैं। सामाजिक समावेशन की कमी और आत्म-संकोच भी उनकी भाषा अभिव्यक्ति को प्रभावित करता है। इस प्रकार, श्रवण-बाधित विद्यार्थियों में पठन और लेखन कौशल के विकास के लिए बहुपक्षीय दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें विशेष शिक्षक प्रशिक्षण, तकनीकी उपकरणों का उपयोग, अभिभावक सहभागिता और व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम संशोधन शामिल हैं। समग्र दृष्टिकोण

अपनाने से इन विद्यार्थियों के भाषा विकास में सुधार संभव है और उन्हें शैक्षिक तथा सामाजिक जीवन में आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

बीज शब्द : श्रवण-बाधित विद्यार्थी, पठन कौशल, लेखन कौशल ,भाषा विकास, विशेष शिक्षा, संकेत भाषा ।

पृष्ठभूमि : मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण क्षमता भाषा और संचार है। भाषा ही वह प्रमुख साधन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचार, भावनाएँ, अनुभव और ज्ञान दूसरों तक पहुँचा सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया का मूल आधार भी भाषा है, क्योंकि ज्ञानार्जन, समझ और सामाजिक सहभागिता का प्रमुख माध्यम यही है। भाषा के दो मुख्य अंग पठन और लेखन व्यक्ति के ज्ञानार्जन और अभिव्यक्ति के मूल उपकरण हैं। श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए इन दोनों कौशलों का विकास अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि सुनने की क्षमता में कमी या अभाव सीधे भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। सुनने की सामान्य प्रक्रिया बाधित होने पर बच्चों में भाषा की सहज समझ और शब्दों का सही उच्चारण विकसित नहीं हो पाता, जिससे पठन और लेखन कौशल का विकास धीमा या अर्धविकसित रहता है। इसके अलावा, श्रवण-बाधित विद्यार्थियों को समग्र शिक्षा वातावरण में भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सामान्य कक्षाओं में सुनने की कठिनाइयाँ, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, उचित शिक्षण सामग्री का अभाव और सामाजिक समावेशन की कमी उनकी सीखने की प्रक्रिया को और जटिल बना देती है। भारत जैसे विशाल देश में, जहाँ समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है, श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के पठन-लेखन कौशल और उनकी सीखने की चुनौतियों का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस अध्ययन से न केवल शिक्षण पद्धतियों में सुधार की दिशा मिलती है, बल्कि इन विद्यार्थियों के शैक्षणिक और सामाजिक विकास को भी सशक्त बनाने में मदद मिलती है। भाषा-अधिग्रहण के क्षेत्र में नोम चॉम्स्की ने यह प्रतिपादित किया कि हर बच्चा जन्मजात भाषा सीखने की क्षमता लेकर आता है, जिसे उन्होंने **सार्वभौमिक व्याकरण** के रूप में जाना। चॉम्स्की के अनुसार, यह अंतर्निहित क्षमता तभी सक्रिय होती है जब बच्चे को पर्याप्त भाषायी इनपुट प्राप्त होता है। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि भाषा सीखना केवल पर्यावरण पर निर्भर नहीं करता, बल्कि व्यक्ति के अंदर एक प्राकृतिक अधिग्रहण क्षमता मौजूद होती है। श्रवण-बाधित बच्चों के लिए यह प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण हो जाती है, क्योंकि ध्वन्यात्मक इनपुट पर्याप्त रूप से नहीं मिल पाता। परिणामस्वरूप, उनका प्राकृतिक भाषा अधिग्रहण बाधित होता है, जिससे पठन और लेखन कौशल का विकास धीमा या अर्धविकसित रह जाता है। इसके अतिरिक्त, वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत में भाषा के विकास को सामाजिक अंतःक्रिया का परिणाम माना गया है। वाइगोत्स्की के अनुसार, बच्चे केवल पर्यावरण, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ सामाजिक सहभागिता के माध्यम से भाषा कौशल सीखते हैं। श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए यदि उपयुक्त संचार माध्यम, जैसे **सांकेतिक भाषा, दृश्य सामग्री, लेखन और होंठ-पठन** आदि उपलब्ध न हों, तो उनका सामाजिक-सांस्कृतिक भाषा अधिग्रहण प्रभावित होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि श्रवण-बाधा केवल शारीरिक कमी नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक **सामाजिक और शैक्षिक चुनौती** बन जाती है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से यह भी प्रतिपादित होता है कि पठन-लेखन कौशल के विकास के लिए केवल भाषायी प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है। सामाजिक सहभागिता, विशेष शिक्षण विधियाँ, सहायक तकनीकी उपकरण और अभिभावक-सहभागिता का समुचित उपयोग अनिवार्य है। उदाहरण स्वरूप, संकेत भाषा के माध्यम से बच्चों को शब्द और वाक्य संरचना सिखाना, दृष्टि-सहायक उपकरणों का उपयोग और व्यक्तिगत शिक्षण योजनाओं का निर्माण उनकी भाषा और लेखन क्षमता को सुदृढ़ कर सकता है। इस प्रकार, श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के शिक्षा और भाषा विकास में **बहुपक्षीय दृष्टिकोण** अपनाना आवश्यक है, जो उनकी शैक्षणिक सफलता और सामाजिक समावेशन दोनों को सुनिश्चित करता है।

श्रवण-बाधित विद्यार्थियों में पठन-लेखन संबंधी चुनौतियाँ : श्रवण-बाधित विद्यार्थियों में **पठन-लेखन संबंधी**

प्रमुख चुनौतियाँ निम्न प्रकार हैं :

- सुनने की अक्षमता के कारण प्राकृतिक भाषा-अधिग्रहण बाधित होता है।
- नए शब्दों को सीखने और प्रयोग करने की गति धीमी होती है।
- वाक्य-विन्यास और काल-प्रयोग में त्रुटियाँ अधिक पाई जाती हैं।
- ध्वनि और अक्षर के बीच संबंध को समझना कठिन होता है।
- सही स्पेलिंग लिखने में अक्सर कठिनाई होती है।
- वे सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में बहुत धीरे पढ़ते हैं।
- पढ़े हुए का आशय, गूढ़ार्थ और भावार्थ समझने में समस्या आती है।
- अपने विचारों को सुव्यवस्थित और स्पष्ट रूप से लिख नहीं पाते।
- संदर्भ अनुसार सही प्रयोग करना कठिन होता है।
- इशारों, चित्रों और संकेतों के सहारे सीखने की प्रवृत्ति अधिक होती है।
- लिखित भाषा और सांकेतिक भाषा के बीच संतुलन बिठाने में दिक़्क़त होती है।
- भाषा अधिग्रहण और पठन-लेखन की प्रगति असमान रहती है।
- श्रवण यंत्र या विशेष तकनीकी उपकरणों की उपलब्धता सीमित रहती है।
- श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त पाठ्य सामग्री और पद्धतियों की कमी रहती है।
- बार-बार की असफलताओं से उनमें हतोत्साह और आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है। आदि है।

चुनौतियों के कारण : श्रवण-बाधित विद्यार्थियों में **पठन-लेखन संबंधी प्रमुख चुनौतियों के कारण** निम्नलिखित हैं:

- भाषा अधिग्रहण के लिए आवश्यक ध्वनियाँ सुनाई नहीं देतीं।
- घर, विद्यालय और समाज से पर्याप्त भाषाई वातावरण न मिल पाना।
- सुनने की क्षमता न होने से नए शब्दों का भंडार बहुत धीमी गति से बढ़ता है।
- ध्वनि और अक्षर के बीच संबंध स्थापित करने में कठिनाई।
- काल, वचन, लिंग आदि के प्रयोग में त्रुटियाँ होना।
- ध्वनियों को सुन न पाने के कारण सही उच्चारण और उसका अभ्यास नहीं हो पाना।
- ध्वनि-संबंधी अभ्यास न होने से सही स्पेलिंग का ज्ञान कठिन होना।
- अक्षर और शब्द पहचानने में अधिक समय लगना।
- पढ़े गए का आशय और भावार्थ समझने में बाधा आना।
- विचारों को व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से लिख पाने में कठिनाई।
- संदर्भानुसार शब्द प्रयोग की क्षमता सीमित होना।
- केवल चित्रों, इशारों और सांकेतिक भाषा पर अधिक निर्भर रहना।
- शिक्षक और सहपाठियों के साथ संवाद की कठिनाई, जिससे सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- उपयुक्त साधन न मिलने से सीखने की गति धीमी रहना।
- श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए अलग से डिज़ाइन की गई पद्धतियाँ न अपनाना।
- उनकी ज़रूरतों के अनुरूप पाठ्यपुस्तकें और संसाधन सीमित होना।
- घर में भाषाई और शैक्षिक समर्थन न मिलना।
- सामान्य शिक्षक अक्सर विशेष आवश्यकताओं को समझने और पूरी करने में सक्षम नहीं होते।
- बार-बार की कठिनाइयों से विद्यार्थी हतोत्साहित हो जाते हैं।

- निरंतर असफलता और कठिनाइयों से पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि कम हो जाना।

समाधान हेतु नीतियाँ : श्रवण-बाधित विद्यार्थियों को पठन-लेखन की प्रक्रिया में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सुनने की क्षमता सीमित होने के कारण वे स्वाभाविक भाषा-अधिग्रहण से वंचित रह जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी शब्दावली अपेक्षाकृत कम होती है, वाक्य-रचना में त्रुटियाँ पाई जाती हैं, वर्तनी में कठिनाई आती है तथा पाठ का आशय समझना जटिल हो जाता है। लेखन के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता भी कमजोर बनी रहती है। इन चुनौतियों को कम करने के लिए उपयुक्त समाधान और प्रभावी शैक्षिक रणनीतियों का उपयोग करना आवश्यक है। प्रथम, **विशेष शिक्षण विधियों** का प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण में सांकेतिक भाषा, होंठ-पठन, चित्र, चार्ट, ग्राफ, मॉडल और मल्टीमीडिया जैसे दृश्य साधनों का उपयोग करने से विद्यार्थियों को भाषा समझने और उसका प्रयोग करने में सुविधा होती है। दृश्य आधारित अधिगम तकनीकें पठन-लेखन कौशल को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होती हैं। द्वितीय, **तकनीकी साधनों का सहयोग** श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। श्रवण यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट, स्पीच थेरेपी सॉफ्टवेयर तथा विशेष मोबाइल एप्लिकेशन भाषा विकास में सहायक बन सकते हैं। साथ ही, **द्विभाषिक दृष्टिकोण** (सांकेतिक भाषा व लिखित भाषा का संयुक्त प्रयोग) विद्यार्थियों को अधिक अवसर प्रदान करता है। तृतीय, **शिक्षक प्रशिक्षण** का विशेष महत्व है। प्रशिक्षित शिक्षक ही इन विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को समझकर उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग कर सकते हैं। छोटे समूहों में शिक्षण, सहयोगात्मक अधिगम तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन उनकी सीखने की क्षमता को बढ़ा सकते हैं। चतुर्थ, **परिवार और समाज की भूमिका** भी महत्त्वपूर्ण है। यदि घर में भाषा-समृद्ध वातावरण हो तथा परिवारजन संवाद में सांकेतिक भाषा का प्रयोग करें, तो विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और पठन-लेखन दोनों विकसित होते हैं। समाज का सहयोग और सकारात्मक दृष्टिकोण उनके आत्मबल को और सुदृढ़ करता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि श्रवण-बाधित विद्यार्थियों की पठन-लेखन संबंधी चुनौतियों को कम करने के लिए बहुआयामी प्रयास आवश्यक हैं। उचित शैक्षिक पद्धतियाँ, तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षित शिक्षकों का मार्गदर्शन तथा परिवार और समाज का समर्थन मिलकर इन विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

निष्कर्ष : भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शिक्षा का अधिकार सभी बच्चों को समान रूप से प्राप्त है। इसके बावजूद श्रवण-बाधित विद्यार्थियों को पठन-लेखन की प्रक्रिया में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सुनने की क्षमता सीमित होने के कारण वे स्वाभाविक भाषा-अधिग्रहण से वंचित रह जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शब्दावली सीमित रहती है और वाक्य संरचना में बार-बार त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं। लिखते समय सही वर्तनी का प्रयोग उनके लिए चुनौतीपूर्ण होता है और पढ़े गए पाठ का गूढ़ार्थ समझना भी कठिन हो जाता है। भारतीय संदर्भ में यह समस्या और भी जटिल हो जाती है क्योंकि यहाँ भाषाई विविधता अत्यधिक है। अधिकांश विद्यालयों में सांकेतिक भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता और सामान्य शिक्षक श्रवण-बाधित विद्यार्थियों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप ये विद्यार्थी धीरे-धीरे पढ़ते हैं, कम समझ पाते हैं और अपनी लेखन अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं कर पाते। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में तो श्रवण यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट या स्पीच थेरेपी जैसी आधुनिक तकनीकी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं होतीं। साथ ही, विशेष शिक्षण सामग्री, चित्र आधारित पाठ्यपुस्तकें और द्विभाषिक दृष्टिकोण (सांकेतिक व लिखित भाषा) का अभाव उनकी पठन-लेखन यात्रा को और कठिन बना देता है। परिवार और समाज का सहयोग भी कई बार पर्याप्त नहीं होता, जिससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास प्रभावित होता है। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि भारत में श्रवण-बाधित विद्यार्थियों के लिए समावेशी और बहुआयामी रणनीतियाँ अपनाई जाएँ। प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, विशेष शिक्षण पद्धतियाँ, तकनीकी सहयोग और परिवार-समाज की सक्रिय भागीदारी ही इन विद्यार्थियों की चुनौतियों को

कम कर सकती है। तभी वे शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलित होकर आत्मनिर्भर नागरिक बन सकेंगे। श्रवण-बाधित विद्यार्थी शिक्षा की मुख्यधारा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं, परंतु पठन-लेखन की प्रक्रिया में उन्हें अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सुनने की क्षमता सीमित होने के कारण वे स्वाभाविक भाषा-अधिग्रहण से वंचित रह जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी शब्दावली कम होती है, व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ अधिक मिलती हैं, वर्तनी में कठिनाई आती है तथा पढ़े गए का आशय समझना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। लेखन के माध्यम से अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना भी उनके लिए कठिन साबित होता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह समस्या और भी गहरी है क्योंकि यहाँ भाषाई विविधता, तकनीकी संसाधनों की कमी तथा प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव इन चुनौतियों को और बढ़ा देता है। अधिकांश विद्यालयों में सांकेतिक भाषा और विशेष शिक्षण पद्धतियों का पर्याप्त उपयोग नहीं होता, जिससे विद्यार्थी पठन-लेखन की गति और दक्षता में पीछे रह जाते हैं। अतः आवश्यक है कि इन विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण पद्धतियाँ, आधुनिक तकनीकी साधन, प्रशिक्षित शिक्षक तथा परिवार और समाज का सहयोग उपलब्ध कराया जाए। यदि बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया जाए तो श्रवण-बाधित विद्यार्थी न केवल अपनी पठन-लेखन संबंधी कठिनाइयों को पार कर सकते हैं, बल्कि शिक्षा की मुख्यधारा में आत्मविश्वासपूर्वक सम्मिलित होकर समाज के सक्रिय और आत्मनिर्भर नागरिक बन सकते हैं।

सुझाव : श्रवण-बाधित विद्यार्थियों की पठन-लेखन संबंधी कठिनाइयों को कम करने और उनके सर्वांगीण विकास के लिए कुछ ठोस एवं व्यावहारिक सुझाव अपनाए जाने आवश्यक हैं। सबसे पहले, **विशेष शिक्षण पद्धतियों** का प्रयोग किया जाए। कक्षा में सांकेतिक भाषा, होंठ-पठन, चित्र, चार्ट, ग्राफ, फ्लैश कार्ड और मल्टीमीडिया का समावेश विद्यार्थियों के लिए सीखने को सहज बना सकता है। शिक्षक को पाठ पढ़ाते समय दृश्य संकेतों और सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि विद्यार्थी शीघ्र समझ सकें। दूसरे, **तकनीकी संसाधनों** की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। श्रवण यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट, डिजिटल लर्निंग टूल्स और स्पीच थेरेपी सॉफ्टवेयर विद्यार्थियों की भाषा क्षमता को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। विद्यालयों में तकनीकी प्रयोग को नियमित किया जाना चाहिए। तीसरे, **शिक्षक प्रशिक्षण** पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। सामान्य शिक्षक को भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक ज़रूरतों की जानकारी दी जानी चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक ही पठन-लेखन संबंधी समस्याओं को पहचानकर उपयुक्त समाधान प्रदान कर सकते हैं। चौथे, **परिवार और समाज की भूमिका** महत्त्वपूर्ण है। घर में भाषा-संपन्न वातावरण उपलब्ध कराना, संवाद में सांकेतिक भाषा का उपयोग करना और बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। समाज को भी इन्हें समान अवसर और सम्मानजनक वातावरण प्रदान करना चाहिए। पाँचवें, **सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर नीतियाँ एवं योजनाएँ** और प्रभावी रूप से लागू की जानी चाहिए। विशेष विद्यालयों में संसाधनों की कमी को दूर कर, समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए। अंततः कहा जा सकता है कि यदि विद्यालय, परिवार, समाज और सरकार मिलकर संयुक्त प्रयास करें, तो श्रवण-बाधित विद्यार्थियों की पठन-लेखन संबंधी कठिनाइयों को काफी हद तक कम किया जा सकता है और उन्हें आत्मनिर्भर एवं सफल जीवन की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. खान, एस. (2020). भारत में श्रवण-बाधित बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 10(2), 77–85.
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी). (2020). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
3. अग्रवाल, जे. सी. (2019). **असाधारण बालक: विशेष शिक्षा का परिचय**. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग.

4. शर्मा, एस., एवं गुप्ता, ए. (2018). श्रवण-बाधित बच्चों में भाषा अधिग्रहण की बाधाएँ. जर्नल ऑफ़ डिसएबिलिटी स्टडीज़, 4(2), 89–98.
5. भार्गव, एम., एवं नारंग, आर. (2017). श्रवण-बाधित बच्चों में पठन कठिनाइयाँ: एक केस अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ़ स्पेशल एजुकेशन, 12(1), 45–58.
6. पांडेय, आर. (2016). श्रवण-बाधा एवं साक्षरता अधिग्रहण: भारतीय कक्षाओं का अध्ययन. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 53(1), 23–37.
7. जैन, पी. (2015). श्रवण-बाधित बच्चों की भाषाई समस्याएँ एवं उनका समाधान. शोध विमर्श, 7(2), 112–119.
8. सिंह, एम. (2013). श्रवण-बाधित बच्चों में लेखन कौशल विकास की कठिनाइयाँ. विशेष शिक्षा पत्रिका, 5(1), 60–72.
9. काइल, एफ. ई., एवं हैरिस, एम. (2010). बधिर बच्चों में पठन विकास के पूर्वानुमानक: 3-वर्षीय अनुवर्ती अध्ययन. जर्नल ऑफ़ एक्सपेरिमेंटल चाइल्ड साइकोलॉजी, 107(3), 229–243. https://doi.org/10.1016/j.jecp.2010.04.011
10. पॉल, पी. वी., एवं ली, सी. (2010). गुणात्मक समानता परिकल्पना. अमेरिकन एनुअल्स ऑफ़ द डैफ, 154(5), 456–469. https://doi.org/10.1353/aad.0.0110
11. मार्शार्क, एम., एवं स्पेंसर, पी. ई. (संपा.). (2010). **ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ़ डैफ स्टडीज़, लैंग्वेज एंड एजुकेशन** (खंड 2). न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
12. गीयर्स, ए., टोबे, ई., मूग, जे., एवं ब्रेनर, सी. (2008). पूर्व-प्राथमिक आयु में कॉक्लियर इम्प्लांटेशन के दीर्घकालिक परिणाम: प्राथमिक से उच्च विद्यालय तक. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ऑडियोलॉजी, 47(S2), S21–S30. https://doi.org/10.1080/14992020802339167
13. स्टोकी, डब्ल्यू. सी. (2005). सांकेतिक भाषा की संरचना: अमेरिकी बधिरों की दृश्य संप्रेषण प्रणाली का खाका. जर्नल ऑफ़ डैफ स्टडीज़ एंड डैफ एजुकेशन, 10(1), 3–37.
14. योशिनागा-इतानो, सी. (2003). सार्वभौमिक नवजात श्रवण स्क्रीनिंग के बाद शीघ्र हस्तक्षेप: परिणामों पर प्रभाव. मेंटल रिटार्डेशन एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज रिसर्च रिव्यूज़, 9(4), 252–266. https://doi.org/10.1002/mrdd.10088
15. कार्चमर, एम. ए., एवं मिशेल, आर. ई. (2003). बधिर और श्रवण-बाधित छात्रों की जनसांख्यिकीय एवं उपलब्धि विशेषताएँ. एम. मार्शार्क एवं पी. ई. स्पेंसर (संपा.), ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ़ डैफ स्टडीज़, लैंग्वेज एंड एजुकेशन (पृ. 21–37). न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. ग्रेगरी, एस. (2002). **बधिर बच्चे और उनके परिवार**. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
17. एंटिया, एस. डी., एवं स्टिन्सन, एम. एस. (1999). बधिर एवं श्रवण-बाधित विद्यार्थियों की समावेशी शिक्षा पर कुछ निष्कर्ष. जर्नल ऑफ़ डैफ स्टडीज़ एंड डैफ एजुकेशन, 4(3), 246–248. https://doi.org/10.1093/deafed/4.3.246
18. विगोत्स्की, एल. एस. (1978). **समाज में मन: उच्चतर मानसिक प्रक्रियाओं का विकास**. कैम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
19. चॉम्स्की, एन. (1965). **सिंटैक्स के सिद्धांत के पहलू**. कैम्ब्रिज: एमआईटी प्रेस.

•